International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 413-415

लोकतंत्र का नारीवादी आख्यान

डा0 नीतू शर्मा

रीडर – हिन्दी विभाग, आई0 टी0 कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

'ठरती हुई हवा कभी इस पहाड़ पर कभी उस पहाड़ पर, कभी चीड़–देवदार की इन पाँतों पर कभी उन पाँतों पर बर्फ के क्रिस्टल जैसे चूरों के साथ जब–तब झर रही है, जैसे भटके को ठौर की तलाश हो।' XX फ्रांस के राष्ट्रपति शारद दी गॉल की राशि चाहे जो रही हो पर 68 उनके लिए कशमकश भरा तूफान लेकर आया। सोर्नवार्न युनिवर्सिटी के छात्र–छात्रा लैटिन क्वार्टर की सड़कों पर सदियों से जमे काले पत्थरों को उखाड़ रहे थे और नारा लगा रहे थे – वे पुराने रीति–रिवाज नही चलने देगें। उन्हें आजादी चाहिए – लड़कियॉ लड़कों के हॉस्टल में और लड़के लड़कियों के हॉस्टल में जब चाहे आ–जा सकते हैं और वे आपसी सहमति से सेक्स कर सकते हैं। दे वांट सेक्स फ्रीडम! फ्रीडम! फ्रीडम! दे वांट फ्रीडम! सेक्स फ्रीडम! (पृ0 27) XX शीलभंग के प्रति पुराने जमाने का ही आकर्षण विद्यमान था। लड़कियॉ भी उतना ही मर्दानेपन के साथ इस मधुमासी यज्ञ को अंजाम देने लगी थीं। (111)

मूल शब्द: लोकतंत्र, नारीवादी आख्यान, सेक्स फ्रीडम

प्रस्तावना

सृजन संवाद पत्रिका के सुपरिचित संपादक ब्रजेश का जनवरी 2011 में प्रकाशित उपन्यास का फलक वैश्विक है। जिसे उन्होने 'गाथा सदी की' शीर्षक दिया हैं। 'वृंदा – गाथा सदी की उपन्यास में दिल्ली विश्वविद्यालय के कैम्पस पर केन्द्रित सैकड़ों पृष्ठों में फैली कथा में विद्यार्थियों और प्रोफेसर्स से सम्बन्धित रोचक घटनाएँ भारतीय नारीवाद की चिन्ताओं में कुछ नया जोड़ती हैं। कैम्पस से उठने वाली सत्याग्रह राजनीति इतनी उर्वर है कि प्रो0 कान्त के साथ–साथ यूरोप के देशों में जैसे आग की तरह फैल जाती है, यह युवा मानस को गहरे प्रभावी करने वाला है। अमेरिकन प्रेसीडेन्ट के नाम वृंदा की चिठ्ठी और वहॉ के संसद में उस पर चर्चा, बंगलौर में वृंदा के चोखे–चटखारे हॉस्टल प्रसंग, डी. यू. के विद्यार्थियों द्वारा अभिनेत्री ऐशुल इन्डो और खिलाड़ी सानिया सोना को सम्बोधित पर्यावरण आंदोलन, कॉस्मेटिक्स मॉल, वृंदा की इजाडोरा युनिवर्सिटी और पूरे देश डांस शो, डिगनिटी मार्च, सवर्णों और दलितों के बीच विवाह आंदोलन आदि प्रसंग नारीवादी चिन्तन में गहरे हस्तक्षेप करते हैं।

कथाकार ने पति–पत्नी और प्रेयसी का त्रिकोण खड़ा किया है, लेकिन यह प्रचलित त्रिकोण से भिन्न है, क्योंकि प्रेम या अधिकार को लेकर कोई संघर्ष नही है। दरअसल यह एलीट नारी की स्वतंत्र अस्मिता और प्रेम और देह को लेकर उसकी निर्द्वन्द्व स्वतंत्र ओर स्वच्छंद मानसिक गढ़न का ऐसा अमली जामा है, जो नारीवादी कथाकारों को भी जितना आश्वस्त करने वाली है, उतना ही हैरान करने वाली भी। वृंदा और डा0 माधुरी दोनों कॉस्मोपॉलिटन कल्चर से हैं। क्या ऐसा नहीं लगता कि कथाकार पहले अध्याय से ही इसकी जमीन बना देता है।

वृंदा, माधुरी और कांत के चरित्र का विश्लेशण आधुनिकता के रोग नहीं, योग के अंतर्गत होना अभीष्ट है।

मध्यवर्गीय द्वंद्व को ध्वस्त करते हुए कथाकार एलीट मानसिकता – मुक्त सेक्स और स्वच्छंद प्रणय की जमीन पर पाठकों को ले जाता है, तो इसके पीछे सुविचारित युक्ति है – वह सदी की गाथा कह रहा है, जिसमें ग्राम्शी का संस्कृति उद्योग पूरी तरह फल–फूल चुका है। आधुनिकता उस मंजिल पर पहुँच चुकी है जहॉ महज गाथा में तब्दील रह जाना ही उसकी नियति है। जैसे–जैसे कथा ढलान की तरफ जाती है वैसे–वैसे पर्यावरण – क्राइसिस का बढ़ना और पूँजीवादी–साम्राज्यवादी काइॅयापन का एक्सपोज होना इस बात का प्रमाण है।

गाँव में कथाकार के पास उद्देश्य तो कई हैं – दलितों में अस्मिता बोध जगाना, गाँव को उसके पूरे आदिम रंग–गंध के साथ सामने रखना। पर संरचनात्मक सौंदर्य की दृष्टि से कथाकार जहॉ गाँव के मूल रंग–गंध ऐन्द्रिक ताप की मर्मस्पर्शी झलकी देता है वहीं दलितों की अस्मितामूलक लड़ाई के मोर्चे पर उसके हाथ से कथा–सूत्र छूटते नजर आते हैं। उपन्यास के कुछ सबसे कमजोर पहलुओं में से यह एक है। इसमें गाँव सूचनात्मक ही है। कथा आधुनिक लकदक सभ्यता पर ही केन्द्रित है और इस संदर्भ में स्तब्ध कर देने वाला प्लाट और किस्सागोई लेकर कथाकार सामने आता है।

लेखक ने उद्योगपतियों के वहशीपन और मीडिया, विज्ञापन में मनमाने ढँग से स्त्रियों की अस्मिता को तार–तार होते दिखाया है।– *संयमित सेक्स की कानूनी धारा शहर में बरकरार थी और अगर कोई मसाज पार्लर जैसी जगह को सुरक्षित समझने की भूल कर लेता तो जो मीडिया ब्लू फिल्मों से भी अधिक उत्तेजक विज्ञापन परोसती, वही इन पार्लरों में आहिस्ते पंहुचकर वहॉ छाए हुए अवैध बसंत को शर्मसार करती। न उद्योग जगत से कोई पूछने वाला था। न मीडिया से और न सरकार से। समय सिकन्दर था और शहर के सारे युवा बीमार हो चले थे। आँख खोलकर शहर देखते है तो प्यास जगती है और पानी मांगते है तो दंडित होते हैं।"*

फेमनिस्ट मूवमेन्ट के साथ स्त्री चेतना और जागरुकता को उपन्यासकार ने खुलकर अभिव्यक्ति दी है – नुक्कड़ पर खड़े शोहदों की गाली–गलौज, अभद्र भाषा, औरतों का तिरस्कार करने पर औरतों द्वारा एक बोल्ड कदम उठाना और उनकी पिटाई कर देना, ये सारे तथ्य इस ओर बरबस ध्यान आकृष्ट करते हैं कि लेखक ने सामाजिक गंदगी की ओर संकेत कर उसे दूर करने के सुझाव भी दिए हैं। वृंदा नारी सशक्तीकरण के इस दौर में अपने भाषण में कहती है – "पुरुष को बनाकर प्रकृति ने स्त्री के लिए नायाब शोहरत सौंपी है और स्त्री को बनाकर उसने पुरुष के लिए नायाब शोहरत दी है। लेकिन दोनों की जिदंगी में प्यार, सुन्दरता

और शान्ति नहीं है। पुरुष हजारों वर्षों से औरतों को शक, अपमान और हिंसा पहले देता रहा है और कुछ बाद में।" स्त्री पुरुष के मध्य जहॉ एक तरफ रोमांचकारी छटा दिखाकर लेखक ने पाठक को सामान्य भावभूमि दी है वही सेक्स, बलात्कार, पर–पुरुष आसक्ति, पर–स्त्रीगमन, स्त्री का स्त्री के प्रति आसक्त होना (लेस्बियन) आदि जितने भी पक्ष हो सकते है उनका नग्न यथार्थ रुप लेखक ने उपन्यास में उकेरा है।

'वृंदा – गाथा सदी की' उपन्यास भारतीय राजनीति को दिशा देता चलता है। विस्तृत कैनवास पर पालिटिकल कटेंट को कथा में गूँथकर उपन्यासकार ने अपनी राजनीतिक चेतना का परिचय दिया है, देश और दुनिया की चिन्ता करने के साथ जो है और जो होना चाहिए अर्थात यथार्थ और वांछित यथार्थ के बीच द्वंदात्मक आख्यान नियत करते हुए कथा का विकास हुआ है। नवगॉधीवादी, आंदोलनों की भरमार कथा के विकासक्रम में बाधक नही हैं बल्कि कथानक को और अधिक मजबूती प्रदान करता है। राजनीतिक स्वार्थान्धता को भी सर्वाधिक मुखर अभिव्यक्ति दी गयी है। लेखक ने गाथा सदी की यूँ ही नहीं कहा है। दिक, काल के बोध को तकनीक जीरो कर चुकी है, वहीं अधिसंख्यक लोग अब भी उसे पंचांग के छोटे से खाने में कैद करके अपनी खोपड़ी के पॉकेट में डालकर जिदंगी ढो रहे हैं। इस विडंबना का ह्यूमरस ट्रीटमेंट सदी के इस गाथाकार के यहॉ देखा जा सकता है। *"देखो लोग अपने मतलब के लिए गॉधी का उपयोग कर रहे हैं। अमेरिका, ब्रिटेन समेत धन और हथियारों का साम्राज्य बढ़ाने वाले देश गॉधी–गॉधी इसलिए चिल्ला रहे हैं ताकि वे गरीब देशों, कम्युनिस्टों और आतंकियों के सामने दिखाने भर को ही सही अपना नैतिक पक्ष रख सकें।"* राजनीति की सही – गलत पहचान और देश व्यापी राजनीति का विश्वव्यापी बन जाना, ये दोनों ही पक्ष अपने में महत्व रखती है यहॉ पर। लेखक कहता है – *"सावधानी से देखना चाहिए। कम्युनिस्ट चुँकि लाल झण्डे लहराते हैं, आक्रोश से उबलकर क्रान्ति – क्रान्ति चिल्लाते हैं, वही सबसे ज्यादा पढ़ते–लिखते और बहस करते हैं, इसलिए यह लगता है कि दुनिया में हिसंक वारदातों के जनक वे ही हैं, जबकि सच इसके विपरीत है। पूँजीवादी चिल्लाते नहीं हैं केवल वारदात को अंजाम देते है, चुप–चाप हँसते हुए, शालीनता के साथ।"* गरीबी, घूसखोरी, नक्सलवाद, आतकंवाद और धर्म इन सबको हथियारों के रुप में प्रयोगकर नेता राजनीति की दिशा को एक घिनौना रुप देने लगे हैं। सदी मंथन के रुप में लेखक ने इन तथ्यों को उजागर किया कि *"या तो करोड़पति राजनीति करने की सोचता है या बाहुबली। राजनीति बड़े–पूंजीपतियों और अंडरवर्ल्ड, अपरवर्ल्ड–बादशाहों का अभेद्य कवच और आरामगाह हो गयी है।"* इस प्रकार राजनेता का महात्म्य वर्णित किया गया है। राजनीति की अंधेरेगर्दी के विभिन्न पक्षों को उजागर करते हुए लेखक ने विश्वव्यापी आन्दोलनों को दर्शाया है जिसमें 'डिगनिटी मार्च, जाति तोड़ो मार्च, नवगॉधीवाद को राजनीति में वृंदा और कांत द्वारा स्थापित किया जाना, युवा विश्व की परिकल्पना, सरकार बड़ी या उद्योगपति का सत्याग्रह, दलित उत्थान, नारी सशक्तिकरण, पॉलिथीन बन्दी मोर्चा, प्रमुख रुप से उपन्यास के पूरे फलक पर अपने पाट को चौड़ा करते चलते हैं। हाइटेक जमाने के प्रेम के विविध रंगों के बीच वियोग में भी सृजनात्मक होते जाना इस उपन्यास की विलक्षणता है। कान्त और वृंदा के विछोह के बाद दोनों का वैश्विक राजनीति में उतरना इसका अनूठा उदाहरण है।

इस उपन्यास में एक ओर जहॉ एशियन पॉलिटिक्स करती वृंदा और यूरोपियन पॉलिटिक्स करते कान्त छाए हुए हैं वहीं दूसरी ओर लेखक सेक्स, विलासिता पर व्यंग्य, ग्लोबल सोसायटी, कानून, सूचना समाज सम्प्रदाय–धर्म–मजहब, विश्व मानवता एवं पर्यावरण जैसे रोचक विषयों को कथा में गूंथता चला गया है।

कथाकार बिहार के गंगूपुर गॉव में रेप काण्ड दिखाता है। बंगलौर के गॉधीयन यूनिवर्सिटी ऑफ पॉलिटिक्स की मालकिन प्रो0 वृदा इस मुद्दे को लेकर पूरे देश में एक बड़ा सत्याग्रह आंदोलन खड़ा कर देती है। वह डिगनिटी मार्च निकालती है और विभिन्न शहरों के माध्यम से कार्पोरेट सेक्टर के मुनाफे के ढॉचे को चिढ़ाते हुए ग्लैमर, साधुता और लोकतंत्र के बीच नया सम्बन्ध स्थपित करती है, जिसे लोकतंत्र के नारीवादी पाठ के रुप पढ़ा जा सकता है। उल्लेखनीय है कि इसमें विमर्श के अंदाज में उठाए गए मुद्दे नहीं हैं। वे कहानी की रवानगी में स्वाभाविक रुप से आते जाते हैं और यह कथा – युक्तियों का कमाल है कि एक खूबसूरत प्रेम कहानी और खूबसूरत राजनीतिक कथा एक दूसरे में पानी लवण की तरह घुल–मिल जाते हैं। मजे की बात है कि इस गाथा में नवगॉधीवाद कहीं–कहीं विचारधारात्मक द्वीप जरुर लगता है, जो कहानी के प्रवाह को वाधित करता हुआ प्रतीत होता है, लेकिन दूसरे ही क्षण कथाकार रोमांचक किस्सागोई से पाठक के सामने एक नई दुनिया ही खोल देता है जैसे – दारुलसफा रोड़ (लखनऊ) पर जब कांत और वृंदा के बीच संवाद बोझिल बौद्धिकता का रुप लेने लगते हैं तो तुरन्त यह कहानी जुड़ जाती है कि वृंदा ने अमेरिकन प्रेसीडेंट को एक चिट्ठी ई–मेल की जो वहॉ की मीडिया में खूब हाईलाइट हुआ। फिर किस्सा पर किस्सा।

यह उपन्यास के बेहद अहम पहलुओं में है कि पुरुष ने स्त्री पर किस तरह भाषा का दंडा चलाया। सीमोन वोउवार पितृसत्तात्मक समाज द्वारा स्त्री के वधियाकरण की जो बात चलाती हैं वह भाषाई स्तर पर पुरुष का स्त्री की मनोभूमि के बड़े हिस्से पर काबिज होने की शातिराना युक्ति द्वारा भी होता रहा है। उपन्यास में एक प्रसंग आता है – विहार के गंगूपुर का।

अरहर और गन्ने के खेतों की लहलह पार करते ही गंगूपुर का हाता पड़ता, जिसको पार करके नुक्कड़ से होते हुए बाजार में प्रवेश होता। नुक्कड़ पर खड़े शोहदों का लक्ष्य होता पास की बिल्डिंग में एक सेठ की जवान बेटियों का भाषाई बलात्कार। पाथरपुर से आती–जाती महिलाएँ रोजाना इनके रंग–ढ़ंग देखतीं। आज इन महिलाओं को पता नही क्या सूझा कि अचानक आक्रामक हो उठीं। इन पाँचों शोहदों पर झपट पड़ीं और उठाकर अहाते में ले गईं, पटककर सीने पर सवार हो लीं और चप्पल निकालकर खोपड़ी गंजी करने लगीं।

भीड़ मौन थी, पच्चीस स्त्रियॉ कह रही थीं – मर्द अपनी भाषा सुधार लें।

मीडिया ने इसे भाषा क्रांति कहा, फेमिनिटी फेवर कहा कुछ ने नानवेज रिवोल्युशन कहकर व्यंग्य किया।

कथाकार ने कई प्रसंगों में औरत के भाषाई बलात्कार और नारीवाद कांउटर (औरत की तरफ से आक्रामक प्रत्युत्तर) की झलकी दी है, उपन्यास के पहले अध्याय में मसूरी में आई. ए. एस. स्मिता सरोज गोल्फ क्लब में डांस कर रही होती हैं। डांस के साथ मधुर मनोज, फैशन इंडस्ट्रलिस्ट कुछ ओवर हो गया। वह स्मिता के पास जाकर बोला – *मेरी आर्कीटेक्ट फ्रेंड एनी भरथिया नहीं आई आज स्साली, नहीं आई स्साली क्योंकि तीन दिन पहले मैंने बहुत हैवी डोज दे दिया फिर दो दिन पहले ऐसी बात आन पड़ी कि जुतियाना पड़ा। अरे जाए स्साली घुसे।* इस पर नारीवाद कांउटर देखा जा सकता है – नहले पर दहला। स्मिता अपने साथियों को बता रही हैं – *'मैं खौल गई, सिर के बाल पकड़कर अपने घुटनों से मारते –मारते, फुटबाल की माफिक साले को नचाते नचाते गेट तक ले गई, पुलिस को बुलवाई और कहा जब इसका नशा उतर जाए तो इसकी लवर एनी भरथिया का बयान लो। अगर उसे यह सरेआम बेइज्जत करने से बाज नहीं आ रहा है तो इसे मैनर सिखाओ। ग्ग ड्राइवर हो, सवारी लड़के हों या पुरुष, जब आपस में बात करते तो हर दूसरे वाक्य में मादर .....*

माँ की, जैसी गालियाँ जरुर होतीं, वृंदा को उबकाई आती, सोचती यह जंगली हिन्दुस्तानी नहीं जंगली पुरुष जाति है। घिन आती है। ये भेड़ा साले सूअर होते हैं क्या? हमेशा माँ को ही हचड़ते रहते हैं। (103–4) ऐसे कई प्रसंग हैं। बॅगंलौर हॉस्टल में सोफिया प्रसंग, अंत्याक्षरी प्रसंग एवं कुछ अन्य स्थलों पर औपन्यासिक कथ्य और संरचना के दृष्टि से सवाल खड़े होते हैं। दूसरे कई स्थलों पर लगता है कि उपन्यासकार कार्पोरेट नारीवाद को बढ़ावा दे रहा हैं, पर कथा में निहित व्यंग्य के दोहरे स्तरों से गुजरते हुए देखा जा सकता है कि वह नारीवाद को गाँधीयन पवित्रतावाद और कार्पोरेट उपभोक्तावाद दोनों से बाहर निकालता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रभा खेतान – उपनिवेश मे स्त्री–पृ0 14
2. प्रभा खेतान – उपनिवेश मे स्त्री–पृ0 35
3. मृणाल पाण्डेय – जहाँ औरतें गढ़ी जाती है– पृ0 62
4. हंस–जनवरी फरवरी – 2000
5. स्त्री विमर्श – रमणिका गुप्ता
6. विद्रोही स्त्री – जर्मेन ग्रीयर
7. शोध सृजन – सं0 बलजीत श्रीवास्तव
8. तेजेन्द्र शर्मा – 'कब्र का मुनाफा'
9. समकाली सोच – गाजीपुर
10. सृजन संवाद – लखनऊ